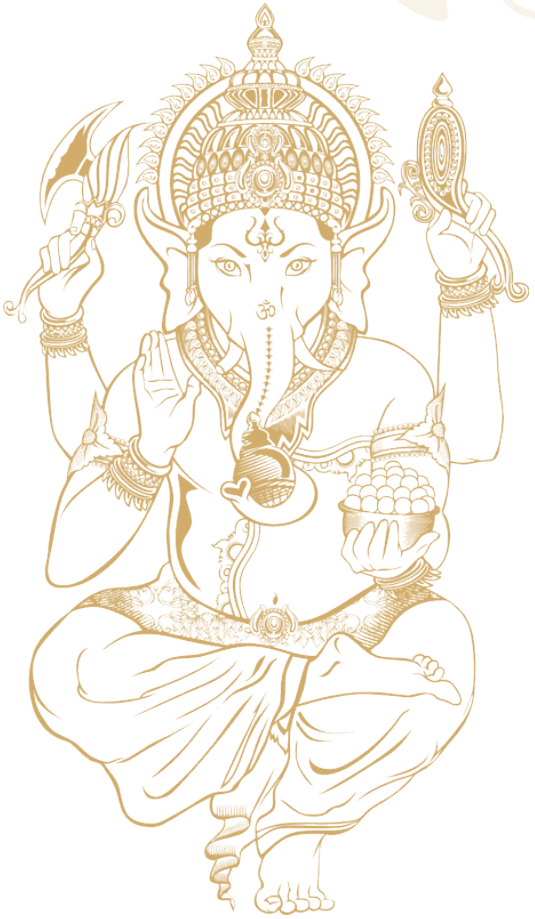

Himmatsingh

05 Jan 2003

11:15 PM

Indore

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121722801

तिथि 05/01/2003 **समय** 23:15:00 **वार** रविवार **स्थान** Indore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:53:42
अक्षांश 22:42:00 उत्तर **रेखांश** 75:54:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	05:48:14 घं
वेलान्तर	00:05:10 घं
सूर्योदय	07:08:01 घं
सूर्यास्त	17:55:23 घं
चैत्रादि संवत	2059
शक संवत	1924
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	3
नक्षत्र	धनिष्ठा
योग	वज्र
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	गी-गीत
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

मंगल 5वर्ष 1मा 12दि
गुरु
18/02/2026
18/02/2042

गुरु	07/04/2028
शनि	19/10/2030
बुध	24/01/2033
केतु	31/12/2033
शुक्र	31/08/2036
सूर्य	19/06/2037
चन्द्र	19/10/2038
मंगल	25/09/2039
राहु	18/02/2042

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 5मा 16दि
सिद्धा
23/06/2022
23/06/2029

सिद्धा	02/11/2023
संकटा	23/05/2025
मंगला	02/08/2025
पिंगला	22/12/2025
धान्या	24/07/2026
भ्रामरी	04/05/2027
भद्रिका	23/04/2028
उल्का	23/06/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			03:23:17	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	---	0:00			
सूर्य			21:04:29	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	गुरु	मित्र राशि	1.37	मातृ	पितृ	वध
चंद्र			26:55:02	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	गुरु	सम राशि	1.32	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			28:43:44	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.30	आत्मा	भ्रातृ	विपत
बुध	व		03:42:19	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	सम राशि	1.01	ज्ञाति	ज्ञाति	मित्र
गुरु	व		22:33:29	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	उच्च राशि	1.04	भ्रातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र			04:19:21	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	सम राशि	1.14	पुत्र	कलत्र	क्षेम
शनि	व		00:11:24	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	1.08	कलत्र	आयु	जन्म
राहु	व		12:53:01	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	राहु	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		12:53:01	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	मित्र राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

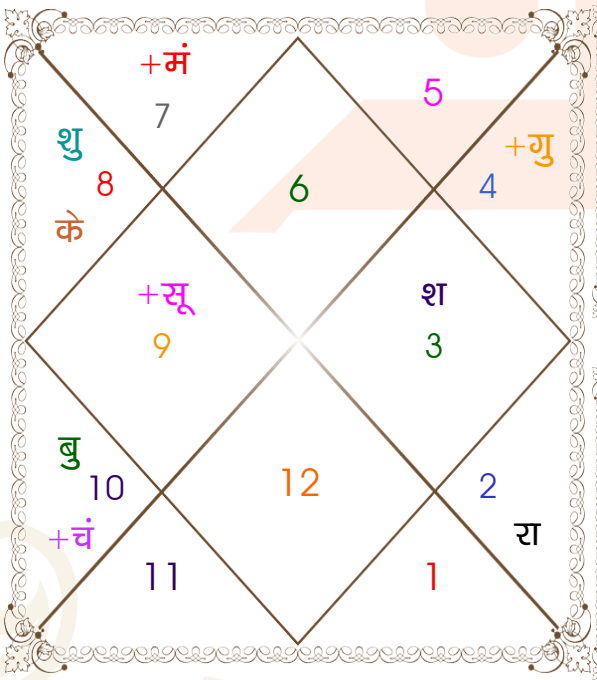

चन्द्र कुंडली

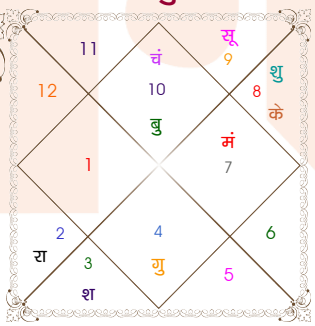

नवमांश कुंडली

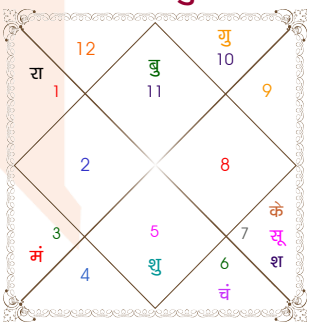

सर्वाष्टकवर्ग

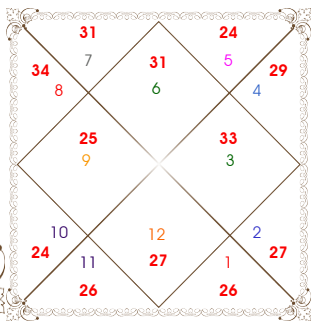

दशमांश कुंडली

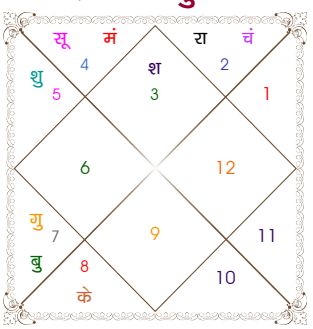

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700

नक्षत्रफल

आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, वर्ग मार्जार, गण राक्षस, नाड़ी मध्य तथा योनि सिंह होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गि" या "गी" अक्षर से होगा। यथा- गिरीश, गिरजाशंकर आदि

आप एक आदर्श पुरूष होंगे तथा हमेशा सदाचारी जीवन व्यतीत करेंगे। आपका उत्तम चरित्र अन्य लोगों के लिए अनुकरणनीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। साथ ही आप एक व्यवहार कुशल व्यक्ति भी होंगे तथा अन्य जनों से अत्यन्त ही मधुर तथा मैत्रीपूर्ण व्यवहार सम्पन्न करेंगे जिससे सभी लोग आपके व्यवहार कुशलता से प्रभावित होंगे तथा अधिकाँशतया आपकी बातों से सहमत रहेंगे। धन सम्पत्ति का आपके पास अभाव नहीं रहेगा एवं धनाढ्य पुरूष के रूप में जाने जाएंगे। आप में शारीरिक बल पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा तथा इसका अभाव नहीं रहेगा। आप के मन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी अतः जरूरत मन्द लोगों तथा दीन दुःखियों के प्रति आपकी विशेष कृपादृष्टि रहेगी एवं यथाशक्ति आप उनका सहयोग करेंगे। इसके साथ ही समाज में आप एक प्रभावशाली पुरूष होंगे तथा दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप जिन्दगी में कभी हताश नही होंगे तथा हमेशा आशान्वित रहेंगे। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक कष्टानुभूति करेंगे। आप जीवन में समस्त भौतिक एवं सांसारिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर उनका प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत शास्त्र के प्रति आप की तीव्र रूचि रहेगी तथा इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। साथ ही इस क्षेत्र में विशेष योग्यता एवं प्रसिद्धि भी प्राप्त कर सकेंगे। सभी परिवारिक जनों तथा अन्य बन्धु बाधवों के मध्य आप सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे। इसके अतिरिक्त आपको नाना प्रकार के कीमती सोने आदि के आभूषणों की भी प्राप्ति हो सकती हैं। साथ ही आप अपने नगर या क्षेत्र में एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा

सभी जन आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आप में दानशीलता का भाव प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगा। अतः दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों तथा संस्थाओं के प्रति आप अपनी इस प्रवृति का प्रायः प्रदर्शन करते रहेंगे। आप में शौर्य गुण सर्वथा विद्यमान रहेगा तथा साहस एवं निर्भीकता से अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। साथ ही धन के प्रति भी आपके मन में लोलुपता का भाव रहेगा इससे कभी कभी आपको परेशानी भी होगी।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

मकर राशि में जन्म लेने के कारण आपका कद ऊँचा तथा मस्तक विशालता से युक्त रहेगा। आपके नेत्र सुन्दर होंगे तथा शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक रहेगा। गीत शास्त्र के प्रति आपकी हार्दिक रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक आप इसका ज्ञानार्जन करने में सफल रहेंगे। साथ इस क्षेत्र में आप यश भी प्राप्त करेंगे। शीत से आप को व्याकुलता की अनुभूति होगी एवं इसे सहन करने में आप प्रायः असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपके हृदय में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा जीवन में इसका अनुपालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। अन्य लोगों को दिखाने के लिए आप धर्म के प्रति भी श्रद्धाभाव प्रदर्शित करेंगे तथा इसका आचरण भी करते रहेंगे। साथ ही आप समाज में एक सम्माननीय पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको हार्दिक मान

सम्मान प्रदान करेंगे। आप में अल्प मात्रा में क्रोध का भाव भी रहेगा। आपके मन में प्रायः सबके प्रति प्रेम एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा घृणा एवं वैमनस्य का अभाव रहेगा आप अपने से अधिक आयु वाले लोगों से मित्रता करना पसन्द करेंगे तथा उन्ही से आपके अधिकाँश घनिष्ठ संबंध रहेंगे। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील रहेंगे अतः काव्य सृजन में आप को सफलता मिल सकेगी। आप में उत्साह का भाव भी दृष्टिगोचर होगा तथा स्वभाव में लोलुपता का भी समावेश रहेगा। जिसमे कभी कभी आप आवश्यक समस्याओं का सामना करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्घृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने परिवार के पालन में हमेशा व्यस्त रहेंगे। आपका कटि भाग पतला होगा। आलस्य का भाव भी आप में रहेगा एवं आपके कार्य शनैः शनैः सम्पन्न होंगे परन्तु भाग्य के प्रबल होने से अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही सम्पन्न हो जाएंगे। आपकी भ्रमण तथा यात्रा करने में भी विशेष रूचि रहेगी अतः अपना अधिकाँश समय इसी में ही व्यतीत करेंगे। आप एक साहसी व्यक्ति भी होंगे एवं कठिन कार्यों तथा अगम्य स्थानों में जाने के लिए भी सदैव तत्पर रहेंगे। आपकी इस निर्भयता से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप में कभी कभी कठोरता का भाव भी उत्पन्न होगा जिसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप वात से उत्पन्न रोगों से प्रायः पीडित रहेंगे एवं समय समय पर इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार के सत्वगुणों से युक्त होंगे एवं जीवन में इसका अनुपालन करते हुए सुख से रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

परिवारिक जनों के मध्य आप सम्मान अर्जित करने में भी सफल रहेंगे तथा कुल परम्परा की अभिवृद्धि करने तथा मर्यादा पालन करने में आपका सर्वाधिक सहयोग रहेगा। स्त्री के आप पूर्ण वश में रहेंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आप उसके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। इन समस्याओं का आप स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में असमर्थ ही रहेंगे। आप को कई शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी छवि रहेगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी रहेगी। माता के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान रहेगा तथा इनकी आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे। आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका सुख प्राप्त करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह रहेगा तथा समय समय पर उनकी पूर्ण सहायता तथा सहयोग करते रहेंगे। आप एक धनाढ्य पुरूष भी

होंगे तथा त्याग की भावना से सर्वदा सुशोभित रहेंगे जिसका परिवार एवं समाज में आप यत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपका परिवार भी विस्तृत रहेगा एवं सुख के प्रति आप विशेष चिन्तित रहेंगे एवं उसकी प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील भी रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आपको अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की धन सम्पत्ति प्राप्त हो सकती हैं। जिसका आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के कल्याण के लिए भी आप चिन्तित तथा उत्सुक रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी भलाई के लिए तत्पर रहेंगे। सलाह या मंत्रणा आदि कार्यों में भी आप दक्ष रहेंगे तथा आपकी इस प्रवृति से अन्य सामाजिक जन भी लाभान्वित होंगे। बन्धुवर्ग का आप पूर्ण लालन पालन करने वाले होंगे तथा वे भी आपको पूर्ण हादिक सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस पूर्वक अपनी सांसारिक समस्याओं का समाधान करते हुए जीवन यापन करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीत शास्त्र में प्रबल रूचि होने के कारण आप इस क्षेत्र में विशेष सफलता तथा ख्याति अर्जित करेंगे तथा सभी लोगों से आदर तथा प्रशंसा प्राप्त करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता भी दर्शनीय रहेगी तथा इससे आपका व्यक्तित्व अत्यन्ताकर्षक रहेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी कभी कभी अधिक बोलने वाली रहेगी तथा कोमलता की भावना भी आप में अल्प मात्रा में ही रहेगी। परन्तु आप एक साहसी व्यक्ति होंगे। अतः साहस तथा निर्भयता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को करने में सफल हो जाएंगे। आप में क्रोधाधिक्य का भाव भी रहेगा एवं इसका भी आप समय समय पर अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करते रहेंगे। आपमें शारीरिक बल भी पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा एवं अन्यजनों से आपका विवाद आदि भी होता रहेगा। साथ ही समाज में कई लोगों से आपका विरोध का भाव भी रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी ग्रसित हो सकते हैं। साथ ही आपका सौन्दर्य भी सामान्य होगा। इसके अतिरिक्त आप अपने सम्भाषण में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप में यत्नपनर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग कें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में जन्म होने के कारण आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में अपूर्ण निष्ठा रहेगी। साथ ही इससे नियमपूर्वक अनुपालन में भी आप यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति अच्छे तथा अन्य लोगों की भलाई करने के कार्यों के प्रति रहेगी। अतः अन्य जन भी आपके सत्कार्यों से प्रसन्न रहेंगे एवं उनसे लाभान्वित भी होंगे। साथ ही आप एक गुणवान पुरूष भी होंगे एवं समस्त सद्गुणों से युक्त रहकर सामाजिक मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। परिवार की सुख समृद्धि के प्रति भी आपकी चिन्ता रहेगी तथा यत्नपूर्वक इसकी वृद्धि के लिए आजीवन आप उद्यत रहेंगे तथा प्रयत्नपूर्वक इसकी उन्नति आपके द्वारा होती रहेगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः वर्जित ही रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी योग्य सुपात्र को दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य क्षेत्रों में समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी। साथ ही सर्वत्र लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त किसी सुयोग्य विद्वान से शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप सम्पन्न

करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700